

ISSN 2350 - 1065 MUKTANCHAL

वर्ष : 12 अंक : 48, अक्टूबर-दिसंबर 2025

शोध, समीक्षण, सूजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर स्विड त्रैमासिक

मधुरेश
विशेष
अंक

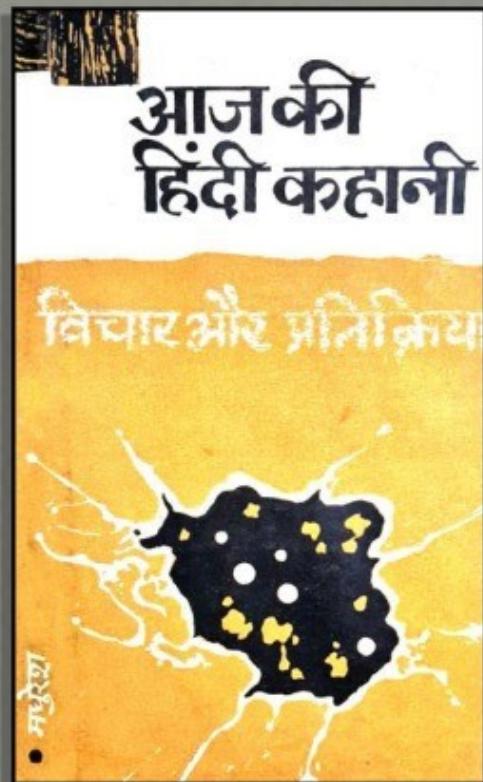
— मधु (२)

मूल्य: 200 रुपये



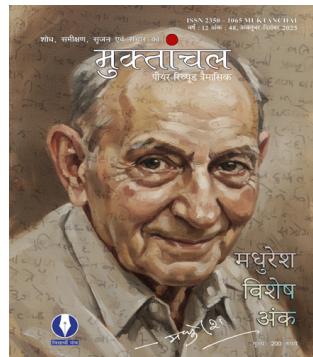
विद्यार्थी मंच

उस पार से ...



नई कहानी की स्थापना के संदर्भ में पुरानी पीढ़ी और परंपरा के नकार की आवाज भी कभी-कभी कुछ कोनों से उठी है। इसमें कोई संदेह नहीं कि हिंदी की नई कहानी-हिंदी को ही क्यों कमोबेश सभी भारतीय भाषाओं की नई कहानी-बदले हुए परिवेश को अधिक तटस्थता और ईमानदारी से अंकित करने को कृतसंकल्प है। विकास की प्रौढ़तर स्थिति में शिल्प के प्रति उसका अतिशय आग्रहशील होना, सांकेतिकता और नवीन बिबों, प्रतीकों के उसके दावों को भी किसी हृद तक समझा जा सकता है। कहानी की बौद्धिक आत्म-सजगता, शिल्प-चमत्कार और कथानक को लेकर अबाधित प्रयोग-शीलता इन सारी चीजों को किसी युग विशेष के संदर्भ में नहीं समझा जा सकता। यह कहानी के विकास के स्वाभाविक मोड़ हैं। यही कारण है कि प्रेमचंद के बाद एक ओर जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय और इलाचन्द्र जोशी की कहानियाँ और द्वासरी ओर यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क और अमृतराय एवं और बहुत से लेखकों की कहानियाँ, बदले हुए परिवेश को बहुत कुछ बदले हुए ढंग से अंकित करती सी दीखती हैं।

आज की हिंदी कहानी
मधुरेश (1971)



मधुरेश विशेष अंक

प्रकाशक	: विद्यार्थी मंच
संपादक	: डॉ. मीरा सिन्हा
अतिथि संपादक	: धनेश दत्त पाण्डेय
प्रबंध संपादक	: सुशील कुमार पाण्डेय
कला संपादक	: शुभागता श्रीवास्तव

विशेष सहयोग :

पंकज साहा	: प्राक्तन अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
मृत्युंजय श्रीवास्तव	: संस्कृतकर्मी और विचारक
विनय कुमार मिश्र	: प्राध्यापक, बंगवासी कॉलेज (सांध्य)
चित्रा माली	: प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता
विजया सिंह	: रानी बिड़ला गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
उत्सव सिन्हा	: वर्चुअल प्रोडक्शन स्पेसिअलिस्ट, मुंबई

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन

विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला, परमजीत पंडित, सुषमा कुमारी एवं रुद्रकांत झा

संपर्क एवं प्रसार :

विनोद यादव : 9007517546, पद्माकर व्यास : 9433196407
चांदनी सिन्हा (वर्मिधन, यू०के०) : +447411412229
लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev 010) में भेजें।
पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

मुद्रक : गाथा प्रकाशन, 6/2/1, आशुतोष मुखर्जी लेन, सलकिया, हावड़ा - 711106

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. अरुण होता	: अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात, पश्चिम बंगाल
डॉ. मोहम्मद फ़रियाद	: प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद
डॉ. मंजु रानी सिंह	: विश्वभारती, शांतिनिकेतन
डॉ. मनीषा झा	: अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय
डॉ. सत्या उपाध्याय	: प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
डॉ. अंजनी कुमार झा	: प्राध्यापक, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार
डॉ. शुभ्रा उपाध्याय	: अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता
डॉ. सुनील कुमार 'सुमन'	: प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.
डॉ. अमित राय	: प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
मुक्तांचल :	A/C. 50200014076551, HDFC Bank BURRABAZAR, KOLKATA-700007. IFSC CODE-HDFC0000219

संपर्क :

डॉ. मीरा सिन्हा (संपादक)	: 9831497320
सुशील कुमार पाण्डेय	: 9681105070
बलराम साब	: 8910783904
ई-मेल	sinhameera48@gmail.com muktanchalpatrika@gmail.com

इस अंक का मूल्य : 200 रुपये

सदस्यता शुल्क : वार्षिक 1000 रुपये, आजीवन 5000 रुपये

संस्थाओं के लिए : वार्षिक 1000 रुपये, आजीवन 5000 रुपये

डाक खर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 50 रुपये



पत्रिका NOTNUL पर उपलब्ध

शोध समीक्षण सूचन संचार

अवस्थिति

06	संस्तुति	
07	धनेश दत्त पाण्डेय	केहिं न सुसंग बड़प्पन पावा ...
13	जवरीमल्ल पारख	प्रतिबद्ध और प्रगतिशील आलोचक : मधुरेश
23	लवलेश दत्त	कथा-आलोचना के शिखरपुरुष : मधुरेश
30	पल्लव	सादगी भरे संस्मरण
33	रणजीत पांचाले	मधुरेश की तीन अति लोकप्रिय पुस्तकें
46	नितिन सेठी	खंडित दाम्पत्य की अक्षुण्ण साहित्यिक अभिव्यक्ति (तोता-मैना की कहानी)
54	सुनील कुमार मानस	प्रमाणिकता और तटस्थिता का समेकित स्वर - 'आलोचना : प्रतिवाद की संस्कृति'
61	रजनी गुप्त	सीढ़ियों से शिखर पर प्रयाण
64	सत्यभामा	नगर क्रष्ण और रचनात्मक आत्मीयता : मधुरेश की दृष्टि में राधेश्याम कथावाचक और पारसी रंगमंच
69	अजीत प्रियदर्शी	मधुरेश की कथा आलोचना : एक विश्लेषण
75	नीरज खरे	दो कथाकारों की अंतःप्रकृति से आलोचना का संवाद
79	हीरा लाल नागर	मधुरेश की आलोचना : एक मुकम्मिल दखल (संदर्भ : कहानीकार जैनेन्द्र कुमार - एक पुनर्विचार)
86	सूर्यनाथ सिंह	आलोचना में बेबाकपन
89	उमाशंकर सिंह परमार	मधुरेश के आलोचना प्रतिमान-इतिहासबोध और यथार्थवाद
95	मीनू खरे	मधुरेश का साहित्यिक पथ

शोध समीक्षण सूचन संचार

अवस्थिति

98	चुम्मन प्रसाद	हिंदी कथा आलोचना और मधुरेश
102	सुषमा कुमारी	कहानीकार जैनेन्द्र कुमार : पुर्विचार और मूल्यांकन की अंतर्यात्रा
107	कविता	समाज और सन्नाटा: मधुरेश की आलोचना में उजास की तलाश आमने-सामने
आमने-सामने		
109	राजेश शर्मा	आलोचना की विश्वसनीयता उसकी वस्तुपरकता से बनती है
119	सुशील कुमार पाण्डेय	आलोचना को आभा नीति से मिलती है, रणनीति से नहीं
स्मृतियों के झरोखे		
124	चमन लाल	हिंदी उपन्यास के गंभीर अध्येता : मधुरेश
126	पाण्डेय शशिभूषण ‘शीतांशु’	यशपाल के सर्वश्रेष्ठ, निष्ठावान एवं कथा-विधा के श्रेष्ठ यशस्वी आलोचक मधुरेश
129	सीमन्तिनी राघव	मधुरेश के आईने में रांगेय राघव
135	देवेन्द्र उपाध्याय	मधुरेश : आलोचना और संबंधों की आत्मीयता
कुछ विशिष्ट		
139	विनोद शाही	शिवदान सिंह चौहान के बहाने हिंदी आलोचना की अपनी सैद्धांतिकी की तलाश
145	प्रदीप सक्सेना	मधुरेश का समीक्षा दर्शन
152	मधुरेश	मैं, मेरा समय और विचारधारा
परिशिष्ट		
162		आवरण : उत्सव सिन्हा

संस्तुति

‘मुक्तांचल’ के मधुरेश विशेष अंक को संस्तुत करते हुए मुझे आत्मिक संतोष की शक्ति का अनुभव हो रहा है। मधुरेश जी जैसे मनीषी के लेखन पर अंक संयोजित करना और वह भी धनेश दत्त पांडेय जैसे गंभीर, विनम्र, समावेशी और सूक्ष्मदर्शी विद्वान के संपादकीय सहयोग के साथ एक अनूठा अनुभव है।

‘मुक्तांचल’ असाधारण को साधारण में ढूँढता है, और खोज निकालता है। आसमान पर इठलातें गुब्बारों को पकड़ने की ललक उसमें कभी नहीं रही, क्योंकि माटी की महक से वह लबरेज है। मधुरेश जी का समीक्षा संसार वैज्ञानिक दृष्टि और विचारों की स्पष्टता लिए हुए है। उन्हें न विचारधारा से परहेज है न प्रतिबद्धता से, लेकिन वे विचारों को आरोपित नहीं करते बल्कि यथार्थ जीवन के सहज, सरल क्रियाकलापों को ही विश्लेषित करते हैं। नामधारी आलोचकों की तरह उन्होंने कभी ध्वजारोहण नहीं किया है, अनवरत अध्ययन एवं सर्वेक्षण में निरत रहने के कारण समीक्षण उनका प्रिय लेखन क्षेत्र रहा है। हिंदी कथा समीक्षक के रूप में मधुरेश जी का कार्य अप्रतिम है।

शोध का क्षेत्र वह जमीन है जिसका कोना-कोना छानने की जरूरत होती है। साहित्य का विषय क्षेत्र विपुल और विराट है जिस पर सच्चा शोधकर्ता भटकता रहता है। मनन, चिंतन एवं कौशल से उत्पन्न सृजन की अभिव्यक्ति अथाह सागर के विस्तार की तरह है, पानु पारखी अतल की गहराइयों में पैठकर मोती ले ही आते हैं। हिंदी कथा साहित्य के लगभग सौ वर्षों की समीक्षा मधुरेश जी ने अपने गहन अध्ययन और वैज्ञानिक दृष्टि से की है। किसी भाषा के साहित्य का इतना बड़ा समीक्षक दुर्लभ है। उनके लेखन की निरंतरता अभी भी जारी है। बड़े नामधारी एवं पूर्वाग्रह ग्रस्त हृंडी के साहित्यकार आलोचना को बड़ा और महत्वपूर्ण कार्य कह कर समीक्षा को उसकी तुलना में दोयम दर्जे का करार देते हैं। यह धारणा एकांगी और खोखली है। आलोचक जहाँ आसमान पर पताका फहराता है वहाँ समीक्षक रचना की अतल गहराइयों को नापता-तौलता, उसकी थाह बनाता है। समीक्षा करना ज़मीं से जुड़ा काम है। मधुरेश जी ने हिंदी कथा साहित्य की धरती को पुरखा और फलप्रभु बनाया है। हम साहित्यजीवियों के लिए वे एक मिसाल हैं और प्रेरणा के स्रोत भी। आज के साहित्यकार अधिक लिखते और कम पढ़ते हैं। प्रकाशन की ललक सबको रहती है लेकिन उसका सही ढंग से प्रसारण नहीं हो पाता। चर्चा का जगत सिकुड़ता जा रहा है, क्योंकि बाजार के सौदेबाजों ने उसे अपने हाथों कैद कर लिया है। शिक्षा और शिक्षक पर शिकंजा इस तरह कसा जा रहा है कि समझदार हलकान हो रहे हैं। समझ पर किए जा रहे आघात से आहत, झूठ के थपेड़ों से जूझते हुए सत्य की स्थापना के लिए सजग परंतु लामबंध न हो पाने के लिए अभिशप्त हैं, इसका कारण है आज की कला और संस्कृति के प्रति हमारा रवैया बदल चुका है, वह जहाँ बलिदान माँगती है वहाँ हम अनुदान के लिए पंक्तिबद्ध तो हो जाते हैं, परंतु लाभ का लोभ बिखरावे को जन्म दे देता है। बेर्झमान कोशिशें हमेशा बिखराव और नाकामी में परिणत होती हैं।

पुनश्च: मधुरेश जी के लेखन कार्य पर अवस्थित इस महत्वपूर्ण अंक को संस्तुत करते हुए मसिजीवियों, विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों से यह सिफारिश है कि वे भी मधुरेश जी की तरह अध्ययन शील, कुशल विश्लेषक बनें जिससे परंपरा सतत प्रवहमान रह सके। इसी आशा और विश्वास के साथ. . .

ऋूरु सिंह
संपादक